लोकमत समाचार
नागपुर, रविवार, 28 अगस्त 2016

# भारत में साइबर अपराधों का विस्फोट

साइबर कवच

वरुण कपूर
अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक
एवं साइबर सिक्योरिटी विशेषज्ञ

देश में साइबर अपराध नागरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर उभर रहे हैं. एसोचैम और महिंद्रा एसएसजी के तत्वावधान में हुए संयुक्त अध्ययन में कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं. इन तथ्यों ने साइबर अपराध नियंत्रण के विभिन्न पहलुओं में एक नया आयाम जोड़ा है. इस अध्ययन से यह बात सामने आई है कि साइबर अपराधों से निपटने में सुरक्षा के नाम पर एक तरह से कुछ भी नहीं है. इसके पहले कि मामला हाथ से निकल कर बेकाबू हो जाए, निर्णायक और प्रभावी कार्रवाई किए जाने की जरूरत है.

इस अध्ययन के अनुसार वर्ष 2014 में देश में साइबर अपराध की 1,49,254 घटनाएं हुई थीं. इसी अध्ययन में यह भी कहा गया था कि वर्ष 2015 में साइबर अपराध की करीब तीन लाख घटनाएं होंगी. इस असाधारण वृद्धि के अनेक कारण हैं. इनमें प्रमुख कारण देश में साइबर अपराधों के विस्फोट से निपटने में सुरक्षा तैयारियों का पर्याप्त नहीं होना है. अन्य कारणों में हमले का सामना करने के लिए नागरिकों में जागरूकता का अभाव है. वर्तमान में जो परिस्थिति है, यदि बनी रही तो कोई आश्चर्य नहीं कि ये आंकड़े खतरनाक स्तर तक पहुंच जाएं. इस परिस्थिति में सबसे ज्यादा नुकसान देश के नागरिकों को ही पहुंचेगा - खासकर युवाओं और छात्रों को - क्योंकि यही वह वर्ग है जो वर्चुअल दुनिया का सबसे ज्यादा उपयोग करता है.

आईटी आधारित सेवाओं के बढ़ने के साथ ही साइबर अपराधों में भी वृद्धि हुई है. ऐसा ही एक क्षेत्र ई-गवर्नेंस का है, क्योंकि समय के साथ ही सभी सरकारी एजेंसियां साइबर आधारित सेवाओं की ओर कदम बढ़ा रही हैं. दूसरा क्षेत्र ऑनलाइन व्यापार का है जिसमें शॉपिंग, बैंकिंग, इंश्योरेंस, व्यापार और अन्य संबंधित व्यावसायिक गतिविधियां शामिल हैं. तीसरी आईटी आधारित सेवा, जो कि तेजी से बढ़ रही है और जो उतनी ही तेजी से साइबर अपराधों की चपेट में भी आई है, देश में बढ़ता इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन है.

साइबर अपराधियों का अगला बड़ा लक्ष्य देश के ग्रामीण क्षेत्र के इंटरनेट उपभोक्ता हैं. दिसंबर 2015 में देश में कुल इंटरनेट यूजर्स 40.2 करोड़ थे, जो कि चीन (60 करोड़) के बाद दुनिया में सबसे बड़ी संख्या है. भारत में ग्रामीण क्षेत्र में सक्रिय इंटरनेट यूजर्स की कुल संख्या उस समय 11.7 करोड़ थी, जिसके जून 2016 में 14.7 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद जताई गई थी. सिर्फ छह माह के भीतर यह 26 प्रतिशत की वृद्धि है, जो कि उल्लेखनीय है. इंटरनेट की बढ़ती पहुंच के साथ ही साइबर अपराधों की संख्या में भी वृद्धि होती जाएगी और नागरिकों में जागरूकता के अभाव की वजह से देश के ग्रामीण इलाकों में यह समस्या और भी विकराल रूप धारण करेगी.

इन दो बड़े तथ्यों - कि देश में आईटी आधारित सेवाएं बढ़ रही हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ रही है - को ध्यान में रखते हुए नीतियां और कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए तथा देश की सुरक्षा एजेंसियों और सरकार द्वारा कार्यान्वित किए जाने चाहिए, ताकि नागरिकों को पूरी सुरक्षा प्रदान की जा सके.■■